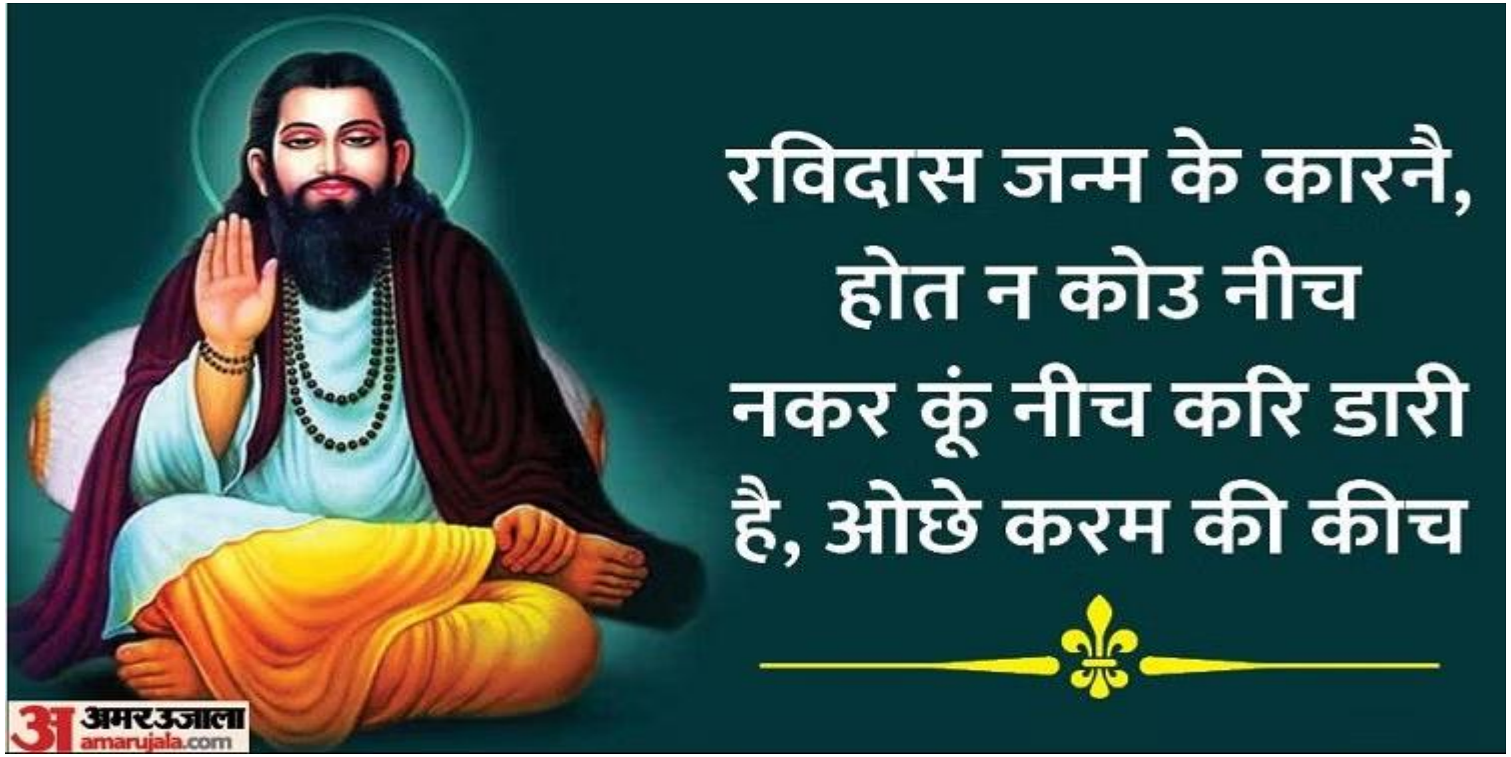
रविदास जन्म के कारनै,
होत न कोउ नीच
नकर कूं नीच करि डारी
है, ओछे करम की कीच
अमर उजाला
amarujala.com

द्वितीय वर्ष कला

विषय- मध्ययुगीन कविता

पाठ का नाम- संत रैदास (पद)

प्रस्तुतकर्ता-डॉ. गजानन वानखेडे

बलीराम पाटील कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, किनवट

संत रैदास का जीवन परिचय-

रैदास हिंदी साहित्य के इतिहास में संतो की परंपरा में संत रैदास का नाम उल्लेखनीय है। उनके जन्म और मृत्यु को लेकर विद्वानों में अलग-अलग मतभेद हैं। जो भी हो रैदास का जन्म बनारस के पास मंडुवाडीह में 1456 में और मृत्यु (1584 को चित्तौड़ में हुई ऐसा माना जाता है। उनके पिता का नाम राघवदास, माता का नाम कर्माबाई और पत्नी का नाम लोना बताया जाता है। उनके संतान के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती। वे जाति के चमार थे। उन्होंने स्वयं कहा भी है कि,"नागर जना मेरी जाति विखियात चमारं,र राम गोविंद गुन सारं ।” रविदास के गुरु का नाम स्वामी रामानंद था । मेवाड़ की झालारानी उनकी शिष्या थी । कहा जाता है कि झालारानी ने स्वयं रानी होकर भी उनके भक्ति भाव से प्रेरित होकर उन्हें निमंत्रण देकर अपने घर बुलाया था और उनसे दीक्षा भी ली थी । यहाँ तक कि चित्तौड़ के कुंवर भोजराज की पत्नी मीराबाई भी रैदास की शिष्या थी ।

संत रैदास का जीवन परिचय-

- रैदास का जन्म भले ही चमार जाति में हुआ हो (लेकिन परमात्मा के नाम का स्मरण करने से और भक्ति-भाव से उन्हें ब्राह्मणों (ऊँची मानी जानेवाली जाति) में भी आदर मिलता रहा। जन्म के आधार पर वे किसी को भी ऊंच-नीच नहीं मानते थे। पराधीनता का जीवन उन्हें पसंद नहीं था। तत्कालीन समय में भारत पर विदेशियों के आक्रमण और (अत्याचार हो रहे थे तब उन्होंने भारतीयों को विदेशियों का मुकाबला कर (पराधीनता से मुक्त होने को कहा है। .अन्य संतों की तरह संत रैदास ने भी समाज में प्रचलित जाति-पांति का खंडन करते हुए धार्मिक भाह्याडम्बरों का भी खुलकर विरोध किया है। वे हमेशा हिंदू मुस्लिम को मानवता का संदेश देते रहे । वे एक ऐसे राज्य की कल्पना करते थे जहाँ कोई छोटा-बड़ा न हो । आज से लगभग छः सौ वर्ष पूर्व सामंतवादी और समाजवादी शासन व्यवस्था का विरोध कर समाज में समता और मानवता चाहनेवाले संत रैदास थे।

ईश्वर की सर्वव्यापकता

एक नजर सूं सबको देख सृष्टि का सिरजनहारा ।
सब घट व्यापक अलख निरंजन, कह रविदास विचारा ।।1।।
बाहर खोजत का फिरइ, घट भीतर ही खोज ।
'रविदास' उनमनि साधिकर, देखहु पिआ कूं ओज ।।2।।

भावार्थ-

संत रविदास ईश्वर की सर्व व्यापकता पर बल देते हुए कहते हैं कि इस सृष्टि का निर्माता एवं सृजनकर्ता सभी को एक ही नजर से देखता है अर्थात् सभी को एक जैसा ही प्रेम करता है। वह इस सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है। अतः हे मनुष्य तू उस ईश्वर को बाहर क्यों खोज रहा है वह तो तेरे ही शरीर के भीतर है। संत रविदास कहते हैं कि हे मनुष्य तू अपने मन को साधकर देख, तुझे वहां प्रिय ईश्वर का तेजस्वी प्रकाश दिखाई देगा।

जाति-पांति के भेदभाव का विरोध

जात पांत के फेर मंहि, उरझि रहइ सभ लोग ।
मानुषता कूं खात इह, 'रविदास' जात का रोग ।।3
'रविदास' जन्म की कारनै, होत न कोउ नीच ।
नर कूं नीच करि डारि है, ओछे करम की कीच ।। 4 ।।

भावार्थ-

संत रविदास समाज में प्रचलित जाति-पांति के भेद भाव का विरोध करते हुए कहते हैं कि समाज में लोग जाति-पांति के चक्कर में उलझकर रह गए हैं और यह जाति की बीमारी मनुष्यता को खाए जा रही है। रविदास जाति की अपेक्षा कर्म को महत्वपूर्ण मानते हैं। उन्होंने कहा है कि जन्म के कारण कोई भी ऊंच-नीच नहीं होता। मनुष्य को तो उसके बुरे कर्म ही नीच बना देते हैं । अतः उसे हमेशा अच्छे कर्म करने चाहिए ।

हिंदू-मुस्लिम एकता

मुसलमान सों सों दोसती, हिंदुअन सों कर प्रीत |
'रविदास' जोति सभ राम की, सभ हैं अपने मीत ।।5।।
हिंदू तुरक मंहि नहीं कछु भेदा, सभ मंह एक रत्त अरु मासा।
दोउ एकह दुजा कोउ नांही, पेख्यो सोध रविदासा' ।।6।।

भावार्थ-

संत रविदास ने हिंदू-मुस्लिम एकता पर बल दिया है। हिंदू मुस्लिम एकता को लेकर वे कहते हैं कि हे मनुष्य तू मुसलमान से दोस्ती कर और हिंदुओं से भी प्रेम कर क्योंकि रविदास के अनुसार सभी में उस सर्वव्यापी ईश्वर की ज्योति समाई हुई है। अतः सभी ईश्वर के लिए प्रिय होते हैं। इसीलिए मनुष्य को धार्मिक भेदभाव नहीं करना चाहिए। हिंदू और मुस्लिम में कोई भेद नहीं है, सभी में एक ही प्रकार का रक्त और माँस है। अतः मनुष्य तू विचार करके देख कि दोनों में कोई भेद नहीं है, दोनों समान हैं। अतः उनमें भेद नहीं करना चाहिए ।

श्रम साधना

'रविदास' श्रम करि खाइहि, जौ लौं पार बसाय ।
नेक कमाई जउ कराइ, कबहुं न निहफल जाय ।।7 ।।
श्रम कउ ईसर जानि कै, जउ पूजहि दिन रैन ।
'रविदास' तिन्हहि संसार मंह, सदा मिलहि सुख चैन ।।8।।

भावार्थ -

मनुष्य के जीवन में श्रम महत्वपूर्ण है। श्रम या परिश्रम को एक साधना के रूप में देखा गया है। श्रम साधना का महत्व बताते हुए संत रविदास कहते हैं कि, हे मनुष्य तुम अपने जीवन में श्रम तथा मेहनत करके खाओं और अपनी उपजीविका चलाओ क्योंकि इमानदारी और निष्ठा से की गई कमाई कभी भी बेकार नहीं जाती। मेहनत एवं परिश्रम से की गई कमाई से ही हमारी जीवन नैया सहजता से पार हो जाती है। संत रविदास श्रम को ईश्वर के रुप में देखना चाहते हैं। अतः श्रम को ईश्वर के बराबर मानकर दिन-रात उसके बारे में सोचना चाहिए और वैसा ही कर्म करना चाहिए। जो ईश्वर के प्रसन्नता मिलेगी।रूप में श्रम को अपनाता है उसे संसार में हमेशा सुख और चैन मिलते रहता है।

रामराज्य की कल्पना

पराधीनता पाप है, जान लेहु रे मीत ।
'रविदास' दास प्राधीन सों, कौन करै है प्रीत । 191
ऐसा चाहौं राज मैं, जहां मिलै सबन कौ अन्न ।
छोट बड़ों सभ सम बसैं रविदास' रहैं प्रसन्न ||10 ||

भावार्थ-

संत रविदास समस्त लोगों के लिए रामराज्य की कल्पना करते हैं । राम राज्य में सभी आजाद रहते थे। कोई किसी का गुलाम या दास नहीं था। इसीलिए पराधीनता को पाप कहते हुए संत रविदास कहते हैं कि हे मनुष्य (दोस्त) तू यह जान ले कि पराधीनता पाप है। रविदास के अनुसार जो दूसरों का दास है अर्थात् पराधीन है उसे कौन प्रेम कर सकता है। इसीलिए वे आगे कहते हैं कि मैं ऐसा रामराज्य चाहता हूं जहां सभी को अन्न मिले अतः कोई भूखा न रहे और साथ ही साथ छोटे बड़े अर्थात गरीब अमीर सभी समानता और प्रेम के साथ एक दूसरे से मिलकर रहे, तब जाकर मुझे अर्थात् सभी को भी प्रसन्नता मिलेगी।

धन्यवाद.....!